युक्तवत्। ज्ञानं प्रमाणं ...प्परिग्रहः' । इति एतेनैव पाठेनोक्तकारिकाद्वयस्य सूचना प्राप्यते । दे (सं. प. गा. १०-११)) ।।१५।।

जं तं गणणाणंतं तं पि तिविहं, परित्ताणंतं जुत्ताणंतं अणंताणंतमिदि । अणंता इदि सामण्णेण वुत्ते एदम्हि चेवाणंते मिच्छाइट्ठि-जीवा होंति इदरेसु अणंतेसु ण होंति त्ति ण जाणिज्जदे, अणंता इदि बहुवयणणिद्देसादो। जत्थ तिण्णि वि अणंताणि अत्थि तस्स चेव अणंताणंतस्स गहणं होदि इदि चे? ण, मिच्छाइट्ठीणं बहुत्तमवेक्खिय बहुवयणुप्पत्तीदो। अहवा तिण्णि वि अणंताणि सभेदे अस्सिऊण अणंतवियप्पाणि। तत्थ एदस्स बहुत्तविवक्खाए बहुवयणं उप्पण्णं एदस्स२ (पूर्वमुद्रित प्रतिषु 'अण्णभेदस्स' इति पाठः।) णेदि ण जाणिज्जदे? एत्थ परिहारो वुच्चदे-- 'अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण' त्ति ज्ञापकादवसीयते यथा अनन्तानन्ता मिथ्यादृष्टय इति, व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिरिति न्यायाद्वा ।

प्रमाण, नय और निक्षेपोंके द्वारा जिस पदार्थकी समीक्षा नहीं की जाती है उसका अर्थ युक्त होते हुए भी अयुक्तसा प्रतीत होता है और कभी अयुक्त होते हुए भी युक्तसा प्रतीत होता है।।१४।।

विद्वान् पुरुष सम्यग्ज्ञानको प्रमाण कहते हैं, नामादिकके द्वारा वस्तुमें भेद करनेके उपायको न्यास या निक्षेप कहते हैं और ज्ञाताके अभिप्रायको नय कहते हैं। इसप्रकार युक्तिसे अर्थात् प्रमाण, नय और निक्षेपकेद्वारा पदार्थका ग्रहण अथवा निर्णय करना चाहिये ।।१५।।

गणनानन्त तीन प्रकारका है- परितानन्त, युक्तानन्त और अनन्तानन्त।

शंका -- सूत्रमें 'अणंता' इसप्रकार मिथ्यादृष्टियोंका परिमाण सामान्यरूपसे कहा गया है, पर इतने कथन करनेमात्रसे अनन्तके तीन भेदोंमेंसे इसी अनन्तसंख्यावाले मिथ्यादृष्टि जीव

हैं। अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीवोंका जितना प्रमाण है इतना दूसरे अनन्तोंमें नहीं, यह बात नहीं जानी जाती हैं, क्योंकि, सूत्रमें अनन्तके किसी भी भेदका उल्लेख न करके केवल उसका बहुवचनरू पसे निर्देश किया है। जहाँ पर तीनों अनन्त पाये जाते हैं वहाँ उसी अनन्तानन्तका ग्रहण होता है, सो भी नहीं है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवोंके बहुत्वकी अपेक्षा करके अनन्त शब्दका बहुवचन प्रयोग बन सकता है। अथवा तीनों अनन्त अपने अपने भेदोंसहित अनन्त विकल्परूप हैं। उनमेंसे इसी भेदकी विवक्षासे बहुवचन दिया है, प्राप्त हुए भेदकी अपेक्षासे नहीं यह नहीं जाना जाता है?

समाधान -- आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं- 'मिथ्यादृष्टि जीव कालकी अपेक्षा अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं' इस ज्ञापक

जं तं अणंताणंतं तं पि तिविहं, जहण्णमुक्कस्सं मज्झिममिदि। तत्थ इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदि जहण्णमणंताणंतं ण भवदि उक्कस्समणंताणंतं च ण भवदि? घ्जम्हि जम्हि अणंताणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्ण-अणुक्कस्स-अणंताणंतस्सेव गहणं१ (ति. प. पत्र ५३. यत्रानन्तानन्तं मार्गणं तत्राजघन्योत्कृष्टानन्तानन्तं ग्राह्यम्। त.रा.वा. ३. ३८.)

सूत्रसे जाना जाता है कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं। अथवा, 'व्याख्यानसे विशेषकी प्रतिपत्ति होती है' ऐसा न्याय है, इससे भी जाना जाता है कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं।

शंका -- पहले जो अनन्तानन्त कह आये हैं वह भी तीन प्रकारका है, जघन्य अनन्तानन्त, उत्कृष्ट अनन्तानन्त और मध्यम अनन्तानन्त।

उनमेंसे यह अनन्तानन्त लिया गया है, जघन्य अनन्तानन्त नहीं लिया गया है और उत्कृष्ट अनन्तानन्त भी नहीं लिया गया है, ऐसा कुछ भी नहीं जाना जाता है?

समाधान -- 'जहाँ जहाँ अनन्तानन्त देखा जाता है वहाँ वहाँ अजघन्य-अनुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तका ही ग्रहण होता है' इस परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें अजघन्य-अनुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तका ही ग्रहण है।

शंका -- वह मध्यम अनन्तानन्त भी अनन्तानन्त विकल्परूप है, इसलिये उनमेंसे यहां कौनसा विकल्प लिया है, इस बातका केवल मध्यम अनन्तानन्तके कथन करनेसे ज्ञान नहीं होता है?

समाधान -- जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्त वर्गस्थान ऊपर जाकर और उत्कृष्ट अनन्तानन्तसे अनन्त वर्गस्थान नीचे आकर मध्यमें जिनेन्द्रदेवके द्वारा यथादृष्ट राशि यहां पर अनन्तानन्त पदसे ग्रहण करनी चाहिये। अथवा, जघन्य अनन्तानन्तके तीनवार वर्गितसंवर्गित करने पर जो राशि उत्पन्न होती है उससे अनन्तगुणी और छह द्रव्योंके प्रक्षिप्त करने पर जो राशि उत्पन्न होती है उससे अनन्तगुणी हीन मध्यम अनन्तानन्तप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशि है।

शंका -- तीन वार वर्गितसंवर्गित राशि कौनसी है?

दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊणुप्पण्णमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिं विरलेऊण अवरं महारासिपमाणं रूबं पडि दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं काऊण पुणो वि उप्पिदमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिपमाणं विरलेऊण अवरमहारासिं विरलणरासिरूवं पडि दाऊण अण्णोण्णब्भासे कदे तिण्णिवारं वग्गिदसंवग्गिदरासी१ (अवराणंताणंतं तिप्पडिरासिं करितु विरलादिं। तिसलागं च समाणिय लद्धेदे पविखवेदव्वा।। त्रि. सा. ४८.)

समाधान -- जघन्य अनन्तानन्तका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जघन्य अनन्तानन्तको देयरूपसे देकर उनके परस्पर वर्गितसंवर्गित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी दो पंक्ति करनी चाहिये, अर्थात् तत्प्रमाण राशिको दो स्थानोंपर स्थापित करना चाहिये। उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर और उनके परस्पर वर्गितसंवर्गित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्ति करनी चाहिये। उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर उनके परस्पर गुणा करने पर जो महाराशि उत्पन्न होती है उसे तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि कहते हैं।

उदाहरण (बीजगणितसे) - जघन्य अनन्तानन्त = क

क

एकवार वर्गितसंवर्गित राशि = क

क

क   क   क + १

क   क x क   क

दोवार ”   ” = क   = क   = क

क + १

क

क   क + १

क + १   क + १ क

क   क x क

तीनवार ”   ” = क   = क

क + १

क + १ + क

क

= क

(अंकगणितसे) --- जघन्य अनन्तानन्त = २

२ ४ २५६

एकवार २ = ४; दोवार ४ = २५६; तीनवार २५६

णाम। एसो सव्वजीवरासीदो किंचूणमिच्छादिट्ठिरासीदो य अणंतगुणहीणो त्ति कधं जाणिज्जदि ? वुच्चदे-जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाणमुवरि तस्सेव वग्गसलागाओ रूवाहियाओ पक्खित्ते जहण्ण-अणंताणंतस्स वग्गसलागा भवंति। जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाहि दुगुणिदाहि जहण्णपरित्ताणंते गुणिदे जहण्णमणंताणंतस्स अद्धछेदणयसलागा हवंति१ (वग्गिदवारा वग्गसलागा रासिस्स अद्धछेदस्स ।अद्धिदवारा वा खलु दलवारा होंति अद्धछिदी ।। त्रि. सा. ७६)। एदाओ च जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो असंखेज्जगुणहीणाओ ।एदाणमुवरि जहण्ण-अणंताणंतस्स वग्गसलागाओ जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाहिंतो विसेसाहियाओ पक्खित्ते पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा भवंति । जहण्ण-अणंताणंतस्स अद्धछेदणाओ जहण्ण-अणंताणंतेण गुणिदे पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागा भवंति२ (विरलिज्जमाणरासिं दिण्णस्सद्धच्छिदीहिं संगुणिदे । अद्धच्छेदा होंति हु सव्वत्थुप्पण्णरासिस्स ।। त्र. सा. १०७.) । एदाओ जहण्ण-अणंताणंतादो अणंतगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो अणंत-

----

(यदि हम २५६ को २५६ से इतने ही वार गुणा करें तो जो संख्या उत्पन्न होगी वह ६१७ अंकवाली होगी ।इसप्रकार इकाईरूप छोटीसी २ संख्याको तीनवार वर्गितसंवर्गित करने पर

६१७ अंकवाली महासंख्या उत्पन्न होती है । इस परसे किसी भी मूलराशिसे उत्पन्न हुई त्रिवार वर्गितसंवर्गित राशिके विस्तारका अनुमान लगाया जा सकता है।)

शंका -- तीनवार वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुई यह महाराशि संपूर्ण जीवराशिसे और संपूर्ण जीवराशिसे कुछ कम (द्वितीयादि शेष तेरह गुणस्थानसंबन्धी राशि और सिद्धराशि प्रमाण कम) मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे अनन्तगुणी हीन है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान -- जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी अर्थात् जघन्य परीतानन्तकी एक अधिक वर्गशलाकाएं मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होती हैं। तथा जघन्य परितानन्तके द्विगुणित अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतानन्तके गुणित करने पर जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेद शलाकाएं होती हैं । ये जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेद शलाकाएं जघन्य परीतानन्तसे असंख्यातगुणी हैं और उसीके अर्थात् जघन्य परीतानन्तके उपरिम वर्गसे असंख्यातगुणी हीन हैं। इन जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें, जो जघन्य परीतानन्तकी अर्धच्छेद शलाकाओंसे अधिक हैं, ऐसी जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं होती हैं। जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेदोंको जघन्य अनन्तानन्तसे गुणित करने पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेद शलाकाएं

तव्वग्गे पुण जायइ णंताणंतं लहु तं च तिख्खुतो। वग्गसु तह न तं होइ णंतखेवे खिवसु छ इमे।। क. ग्रं. ५, ८४.

गुणहीणाओ। एदाणमुवरि पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागाओ पक्खित्ते विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा हवंति१ (विरलिदरासिच्छेदा दिण्णद्धच्छेदछेदसम्मिलिदा। वग्गसलागपमाणं होंति समुप्पण्णरासिस्स।। त्रि. सा. १०८.) । पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धच्छेदणाहि पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासि

गुणिदे विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धछेदणयसलागाओ भवंति। एदाओ पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो अणंतगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो अणंतगुणहीणाओ। एदाणमुवरि विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागाओ पक्खित्ते तदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा भवंति। एसो वग्गसलागरासी पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो उवरि

होती हैं। ये प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेद शलाकाएं जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्तगुणी हैं और उसीके अर्थात् जघन्य अनन्तानन्तके उपरिम वर्गसे अनन्तगुणी हीन हैं। इन प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं होती हैं। तथा प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेद शलाकाओंके द्वारा प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिको गुणित करने पर दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेद शलाकाएं होती हैं। ये दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेद शलाकाएं प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिसे अनन्तगुणी हैं, और उसीके, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिके उपरिम वर्गसे अनन्तगुणी हीन हैं। इन दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें दूसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं होती हैं।

विशेषार्थ --- जो राशि विरलन-देयक्रमसे उत्पन्न होती है उसके अर्धच्छेद विरलित-राशिको देयराशिके अर्धच्छेदोंसे गुणा करने पर आते हैं। तथा उसकी वर्गशलाकाएं विरलित-राशिके अर्धच्छेदोंमें देयराशिके अर्धच्छेदोंके अर्धच्छेद या वर्गशलाकाएं मिला देने पर होती हैं। गणितके इस नियमके अनुसार जघन्य परितानन्तके अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतानन्तको गुणा कर देने पर जघन्य युक्तानन्तके अर्धच्छेद और जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर जघन्य युक्तानन्तकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होंगी। फिर भी प्रकृतमें जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेद लाना है। परंतु जघन्य अनन्तानन्त जघन्य युक्तानन्तके उपरिम वर्गरूप है, और वर्गसे उपरिम वर्गकी वर्गशलाकाओं और अर्धच्छेदोंको लानेके लिये यह नियम है

कि विवक्षित वर्गके अर्धच्छेदोंसे उपरिम वर्गके अर्धच्छेद दूने और विवक्षित वर्गकी वर्गशलाकाओंसे उपरिम वर्गकी वर्गशलाकाएं एक अधिक होती हैं। इसलिये जघन्य युक्तानन्तके अर्धच्छेदोंको दूना कर देने पर जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेद और जघन्य युक्तानन्तकी वर्गशलाकाओंमें एक और मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं होंगी। इस संपूर्ण व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर यह कहा गया है कि जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी एक अधिक वर्गशलाकाएं मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं और जघन्य परीतानन्तकी द्विगुणित अर्धच्छेद शलाकाओंसे जघन्य परितानन्तको गुणित कर देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेद शलाकाएं होती हैं । इसी प्रकार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेद लानेकी पद्धतिके अनुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिके अर्धच्छेद और वर्गशलाकाओंके संबन्धमें भी समझ लेना चाहिये ।

उदाहरण (बीजगणितसे) --

जघन्य परीतानन्तको वर्गितसंवर्गित करनेसे जघन्य युक्तानन्त उत्पन्न होता है । तथा जघन्य युक्तानन्तके वर्गप्रमाण जघन्य अनन्तानन्त है।

अ
२
मान लो जघन्य परीतानन्तका मान २

अ
२ + अ + १ क
परीतानन्तकी वर्गितसंवर्गित राशिके २ २
उपरिम वर्ग प्रमाण जघन्य अनन्तानन्त = २ = २ (मान लो)

क
२ + क ख
२ २
अनन्तानन्त प्रथमवार वर्गितसंवर्गित = २ = २ (मान लो)

ख

२ + ख   ग

•   २

द्वितीयवार वर्गितसंवर्गित =   २   = २   (मान लो)

ग

२ + ग

२

तृतीयवार वर्गितसंवर्गित = २

२ संख्यासे लेकर जितनीवार वर्ग करनेसे विवक्षित राशि उत्पन्न होती है उतनी उस वर्गराशिकी वर्गशलाकाएं होती हैं । जैसे ४ की वर्गशलाका १ और १६ की २ होती हैं, क्योंकि, २ का एकवार वर्ग करनेसे ४ और २ वार वर्ग करनेसे १६ उत्पन्न होते हैं । तथा विवक्षित राशिको जितनीवार आधा आधा करते हुए एक शेष रहे उतने उस राशिके

अ

२

अर्धच्छेद होते हैं; जैसे १६ के अर्धच्छेद ४ होते हैं। बीजगणितसे २ राशिके

अ

अर्धच्छेद २ होंगे और वर्गशलाका अ होगी।

एगमवि वग्गट्ठाणं ण चढिदो, तेणेदेसिं दोण्हं रासीणं वग्गसलागाओ सरिसाओ होंताओ वि वग्गसलागाओ जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जगुणाओ। जदि एसो रासी सव्वजीववग्गसलागरासिणा सरिसो हवदि तो तिण्णिवारवग्गिसंवग्गिदरासिणा सव्वजीवरासी वि सरिसो होज्ज; ण च एवं । तं कधं ? ‘जहण्ण-अणंताणंतं वग्गिज्जमाणे वग्गिज्जमाणे जहण्ण-अणंताणंतस्स हेट्ठिमवग्गट्ठाणेहिंतो उवरि

अणंतगुणवग्गट्ठाणाणि गंतूण सव्वजीवरासिवग्गसलागा उप्पज्जदि' त्ति परियम्मे वुत्तं । गुणगारो पि जम्हि जम्हि अणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णअणुक्कस्साणंताणंतयं घेत्तव्वं । ण च तदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिवग्गसलागाओ

अब आगे इन सब राशियोंकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेद लिखे जाते हैं--

	ज. प. अ.	ज. अ. अ.	प्र. व. सं.	द्वि. व. सं.	तृ. व. सं
		अ	क	ख	ग
	अ	२ + अ + १	२ + क	२ + ख	२ + ग
	२	२	२	२	२
प्रमाण	२	२	२	२	२
		अ	क	ख	ग
वर्ग श.	अ	२ + अ १	२ + क	२ + ख	२ + ग
		अ	क	ख	ग
	अ	२ + अ + १	२ + क	२ + ख	२ + ग
अर्धच्छेद	२	२	२	२	२

यह तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाका राशि प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिसे ऊपर एक भी वर्गस्थान वृद्धिको प्राप्त नहीं हुई है, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिके उपरिम वर्गके भीतर ही तिसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाराशि आती है, इसलिये इन दोनों राशियों की, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं और तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाएं समान होती हुई भी वे वर्गशलाकाएं जघन्य परीतानन्तसे असंख्यातगुणी ही होती हैं। यदि यह तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाराशि संपूर्ण जीवोंकी वर्गशलाकाराशिके समान होती है, ऐसा मान लिया जावे, तो तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिके समान संपूर्ण जीवराशि भी हो जावे। परंतु ऐसा है नहीं।

शंका -- यह कैसे?

समाधान -- 'जघन्य अनन्तानन्तके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंसे ऊपर अनन्तगुणा वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होती हैं,' इसप्रकार परिकर्ममें कहा है । गुणकार भी जहाँ जहाँ अनन्तरूप देखनेमें आता है वहाँ वहाँ अजघन्य-अनुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तरूप गुणकारका ग्रहण करना

हेट्ठिमवग्गट्ठाणेहिंतो उवरिx परियम्म-उत्तx-अणंतगुणवग्गट्ठाणाणि गंतूणुप्पण्णाओ, xकिंतु हेट्ठिमवग्गट्ठाणादो उवरि सादिरेयजहण्ण-परित्ताणंतगुणमद्धाणंx गंतूणुप्पण्णाओ। केण कारणेण? जहण्णपरित्ताणंतस्स अद्धच्छेदणाहिंतो विसेसाहियाहि जहण्ण-अणंताणंतस्स वग्गसलागाहि तदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिवग्गसला-गाणं वग्गसलागाओx हेट्ठिमअद्धाणेणूणाओx अवहिरिज्जमाणे सादिरेयजहण्णपरित्ताणंतमागच्छदि त्ति। ण च जहण्ण-अणंताणंतादो हेट्ठिम-अद्धाणं पडुच्च सादिरेयजहण्ण-परित्ताणंतगुणं गंतूण सव्वजीवरासिवग्गसलागाओ१ (तस्मिन्नेकवारं वर्गिते द्विकवारानन्तस्य जघन्यमुत्पद्यते। ततोऽनन्तस्थानानि गत्वा वर्गशलाका: । त्रि. सा. गा. ६९ टीका। तस्मिन्नेकवारं वर्गिते जघन्यद्विकवारानंतमुत्पद्यते। तत: अनंतानंतवर्गस्थानानि गत्वा जीवराशेवर्गशलाकाराशि: । गो. जी. जी. प्र. टी. (पर्याप्तिप्ररूपणा)।

X पुष्कल पाठभेद व प्रतिमें नहीं है छ. ४) उप्पण्णाओ, किंतु अणंताणंतगुणं गंतूण । कुदो? 'अणंताणंतविसए अजहण्णमणुक्कस्स- अणंताणंतेणेव गुणगारेण भागहारेण वि होदव्वं' इदि परियम्मवयणादो । ण च एदस्स जहण्णपरित्ताणंतादो विसेसाहियस्स असंखेज्जत्तमसिद्धं, संते वएणिट्ठंतस्स अणंतत्तविरोहादो । ण च

चाहिये। परंतु तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानसे ऊपर परिकर्मसूत्रमें कहे गये अनन्तगुणा वर्गस्थान जाकर नहीं उत्पन्न होती हैं, किंतु जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंसे ऊपर कुछ अधिक जघन्य परीतानन्तगुणा वर्गस्थान

जाकर उत्पन्न होती हैं। इससे प्रतीत होता है कि संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाओंसे तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं अनन्तगुणी न्यून हैं ।

शंका -- ऐसा किस कारणसे है?

समाधान -- जो कि जघन्य परितानन्तके अर्धच्छेदोंसे अधिक हैं ऐसी जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाओंके द्वारा जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानसे न्यून तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाएं अपहृत करने पर कुछ अधिक जघन्य परितानन्त आता है। परंतु जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंकी अपेक्षा जघन्य अनन्तानन्तसे कुछ अधिक जघन्य परितानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी-वर्गशलाकाएं नहीं उत्पन्न होती हैं, किंतु जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्तानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होती हैं। क्योंकि, 'अनन्तानन्तके विषयमें गुणकार और भागहार अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तरूप ही होना चाहिये' इसप्रकार परिकर्मसूत्रका वचन है। ऊपर जो जघन्य परीतानन्तसे विशेषाधिक कह आये हैं वह विशेषाधिक असंख्यातरूप है यह बात असिद्ध नहीं है, क्योंकि, व्यय होने पर समाप्त होनेवाली राशिको अनन्तरूप माननेमें विरोध आता है। इसप्रकार कथन करनेसे अर्धपुद्गल

अद्धपोग्गलपरियट्टेण वियहिचारो, उवयारे तस्स आणंतियादो । को वा छद्दव्वपक्खित्तरासी ? वुच्चदे- तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासिम्हि---

सिद्धा णिगोदजीवा वणप्फदी कालो य पोग्गला चेव ।

सव्वमलोगागासं छप्पेदे णंतपक्खेवा१ (ति. प. पत्र ५३. सिद्धा णिगोदसाहियवणप्फदिपोग्गलपमा अणंतगुणा । काल अलोगागासं छच्चेदेणंतदुक्खेवा ।। त्रि. सा. ४९, सिद्धा निगोअजीवा वणस्सई काल पुग्गला चेव । सव्वमलोगनहं पुण तिवग्गिउं केवलपगंमि ।। क. ग्रं. ४, ८५.) ।।१६।।

एदे छप्पक्खेवे पक्खित्ते छद्दव्वपक्खित्तरासी होदि। एदस्स अजहण्णमणुक्कस्स-अणंताणंतस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तो२ (प्रतिषु 'तत्तियाणिमेत्तो' इति पाठः।) मिच्छाइट्ठिरासी । एदं कधं णव्वदि त्ति भणिदे अणंता इदि वयणादो। एदं वयणमसच्चत्तणं किं ण अल्लियदि त्ति भणिदे असच्चकारणुम्मुक्कजिणवयणकमलविणिग्गयत्तादो। ण च पमाणपडिग्गहिओ पयत्थो पमाणंतरेण परिक्खिज्जदि, अव्ववट्ठाणादो।

परिवर्तनके साथ व्यभिचार हो जायेगा सो भी बात नहीं है, क्योंकि, अर्धपुद्‌गल परिवर्तन कालको उपचारसे अनन्तरूप माना है।

शंका -- जिसमें छह द्रव्य प्रक्षिप्त किये गये हैं वह राशि कौनसी है?

समाधान -- तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिमें- सिद्ध, निगोदजीव, वनस्पतिकायिक, पुद्‌गल, कालके समय और अलोकाकाश ये छहों अनन्त राशियां मिला देना चाहिये ।।१६।।

प्रक्षिप्त करने योग्य इन छह राशियोंके मिला देने पर छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि होती है। इसप्रकार तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिसे अनन्तगुणे और छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशिसे अनन्तगुणे हीन इस मध्यम अनन्तानन्तकी जितनी संख्या होती है तन्मात्र मिथ्यादृष्टि जीवराशि है।

शंका -- मिथ्यादृष्टिराशि इतनी है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान -- सूत्रमें 'अणंता' ऐसा बहुवचनानन्त पद दिया है, जिससे जाना जाता है कि मिथ्यादृष्टिराशि मध्यम अनन्तानन्त प्रमाण होती है।

शंका -- यह वचन असत्यपनेकी क्यों नहीं प्राप्त हो जाता है?

समाधान -- असत्य बोलनेके कारणोंसे रहित जिनेन्द्रदेवके मुखकमलसे निकले हुए ये वचन हैं, इसलिये इन्हें अप्रमाण नहीं माना जा सकता। जो पदार्थ प्रमाणप्रसिद्ध है उसकी दूसरे प्रमाणोंकेद्वारा परीक्षा नहीं की जाती है, क्योंकि, ऐसा माननेपर अव्यवस्था हो जायेगी।

अणंताणंताहि ओसप्पिणि--उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ।। ३ ।।

किमट्ठं खेत्तपमाणमइकम्म कालपमाणं वुच्चदे ? 'जं थूलं अप्पवण्णणीयं तं पुव्वमेव भणियव्वं' इदि णायादो । कधं कालपमाणादो खेत्तपमाणं बहुवण्णणिज्जं ? वुच्चदे- खेत्तपमाणे लोगो परूवेदव्वो । सो वि सेढिपरूवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति सेढी परूवेदव्वा । सा वि रज्जुपरूवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जू परूवेदव्वा । रज्जू वि सगच्छेदणाहि विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जुच्छेदणा परूवेदव्वा । ताओ वि दीवसागरपरूवणाए विणा ण जाणिज्जंति त्ति दीवसागरा परूवेदव्वा त्ति । ण च कालपमाणे एम्महंती परूवणा अत्थि, तदो कालादो खेत्तं सुहुममिदि जाणिज्जदे । केवि आइरिया एवं भणंति बहुवेहि पदेसेहि उवचिदं सुहुममिदि । उत्तं च--

सुहुमो य हवदि कालो तत्तो य सुहुमदरं हवदि खेत्तं ।

अंगुल-असंखभागे हवंति कप्पा असंखेज्जा१।। (सुहुमो य होइ कालो तत्तो सुहुमयरं हवइ खेत्तं । अंगुलसेढीमेत्ते ओसप्पिणीओ असंखेज्जा ।। वि. भा. पृ. २४, गा. २१८.) ।।१७।।

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणीयों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं ।।३।।

शंका -- क्षेत्रप्रमाणको उल्लंघन करके कालप्रमाणका कथन क्यों किया जा रहा है?

समाधान -- 'जो स्थूल और अल्पवर्णनीय होता है उसका पहले ही कथन करना चाहिये' इस न्यायके अनुसार पहले काल प्रमाणका कथन किया जा रहा है।

शंका -- कालप्रमाणकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण बहुवर्णनीय कैसे है?

समाधान -- क्षेत्रप्रमाणमें लोक प्ररूपण करने योग्य है। उसका भी जगच्छ्रेणीके प्ररूपणके विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये जगच्छ्रेणीका प्ररूपण करना चाहिये। जगच्छ्रेणीका भी रज्जुके प्ररूपण किये विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये रज्जुका प्ररूपण करना चाहिये। रज्जुका भी उसके अर्धच्छेदोंका कथन किये बिना ज्ञान नहीं हो सकता है,

इसलिये रज्जुके छेदोंका प्ररूपण करना चाहिये। रज्जुके छेदोंका भी द्वीपों और सागरोंके प्ररूपणके विना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये द्वीपों और सागरोंका प्ररूपण करना चाहिये। परंतु कालप्रमाणमें इसप्रकार बडी प्ररूपणा नहीं है, इसलिये कालप्रमाणकी प्ररूपणाकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाणकी प्ररूपणा अतिसूक्ष्मरूपसे वर्णित है, यह बात जानी जाती है।

कितने ही आचार्य ऐसा कथन करते हैं कि जो बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है। कहा भी है--

कालप्रमाण सूक्ष्म है और क्षेत्रप्रमाण उससे भी सूक्ष्म है, क्योंकि, अंगुलके असंख्यातवें भागमें असंख्यात कल्प होते हैं ।।१७।।

इदि वक्खाणं ण घडदे । कुदो? खेत्तादो दव्वस्स पच्छा परूवणपसंगादो। तं कधं? एक्कम्हि दव्वंगुले अणंतपरमाणुपदेसेहि णिप्फण्णे एगं खेत्तंगुलमोगाहे, गणणं पडुच्च अणंताणि खेत्तंगुलाणि होंति त्ति।

सुहुमं तु हवदि खेत्तं तत्तो य सुहुमदरं हवदि दव्वं।

खेत्तंगुला अणंता एगे दव्वंगुले होंति ।।१८।। इदि ।।

कधं कालेण मिणिज्जंते मिच्छाइट्ठी जीवा? अणंताणंताणं ओसप्पिणि उस्सप्पिणीणं समए ठवेदूण मिच्छाइट्ठिरासिं च ठवेऊण कालम्हि एगो समओ मिच्छाइट्ठिरासिम्हि एगो जीवो अवहिरिज्जदि। एवमवहिरिज्जमाणे अवहिरिज्जमाणे सव्वे समया अवहिरिज्जंति, मिच्छाइट्ठिरासी ण अवहिरिज्जदि। एत्थ चोदगो भणदि- मिच्छाइट्ठिरासी अवहिरिज्जदु, सव्वे समया ण अवहिरिज्जंतु त्ति। केण कारणेण? कालमाहप्पपरूवयसुत्तदंसणादो । किं तं सुत्तं? वुच्चदे--

----

परंतु उनका इसप्रकारका व्याख्यान करना घटित नहीं होता है, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर क्षेत्रप्ररूपणाके अनन्तर द्रव्यप्ररूपणाका प्रसंग प्राप्त होता है।

शंका -- यह कैसे?

समाधान -- क्योंकि, अनन्त परमाणुरूप प्रदेशोंसे निष्पन्न एक द्रव्यांगुलमें अवगाहनाकी अपेक्षा एक क्षेत्रांगुल ही है, किंतु गणनाकी अपेक्षा अनन्त क्षेत्रांगुल होते हैं, इसलिये 'जो बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है' यह कहना ठीक नहीं है।

क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्मतर द्रव्य होता है, क्योंकि, एक द्रव्यांगुलमें अनन्त क्षेत्रांगुल होते हैं ।।१८।।

शंका -- कालप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कैसे निकाला जाता है?

समाधान -- एक ओर अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके समयोंको स्थापित करके और दूसरी ओर मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशिको स्थापित करके कालके समयोंमेंसे एक एक समय और उसीके साथ मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणमेंसे एक एक जीव कम करते जाना चाहिये। इसप्रकार उत्तरोत्तर कालके समय और जीवराशिके प्रमाणको कम करते हुए चले जाने पर अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके सब समय समाप्त हो जाते हैं, परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण समाप्त नहीं होता हैं।

शंका -- यहाँ पर शंकाकारका कहना है कि मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण भले ही समाप्त हो जाओ परंतु कालके संपूर्ण समय समाप्त मत होओ, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणकी अपेक्षा कालके समयोंका प्रमाण बहुत अधिक है । इसप्रकारसे प्ररूपण करनेवाला सूत्र भी देखनेमें आता है। वह सूत्र कौनसा है इसप्रकार पूछने पर शंकाकार कहता है-

----

धम्माधम्मागासा तिण्णि वि तुल्लाणि होंति थोवाणि।
वड्ढीदु जीवपोग्गलकालागासा अणंतगुणा ।।१९।।

ण एस दोसो, अदीदकालग्गहणादो । जहा लोए तहा सव्वे लोए१ (पूर्वमुद्रित प्रतिषु 'जहा सव्वे लोए' इति पाठः।) पत्थो तिहा विहत्तो, अणागदो वट्टमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अणिप्फण्णो अणागदो णाम। घडिज्जमाणो वट्टमाणो। णिप्फण्णो

ववहारजोग्गो अदीदो णाम । तत्थ अदीदेण पत्थेण मिणिज्जंते सव्वबीजाणि। एत्थुवसंहारगाहा--

पत्थो तिहा विहत्तो अणागदो वट्टमाणतीदो य ।
एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे सव्वबीजं तु ।।२०।।

तधा कालो वि तिविहो, अणागदो वट्टमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अदीदेण मिणिज्जंते सव्वे जीवा । एत्थुवसंहारगाहा---

कालो तिहा विहत्तो अणागदो वट्टमाणतीदो य ।
एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे जीवरासी दु ।।२१।।

धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य और लोकाकाश ये तीनों ही समान होते हुए स्तोक हैं । तथा जीवद्रव्य, पुद्‌गलद्रव्य, कालके समय और आकाशके प्रदेश, ये उत्तरोत्तर वृद्धिकी अपेक्षा अनन्तगुणे हैं ।।१९।।

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालनेमें अतीत कालका ही ग्रहण किया है।

जिसप्रकार लोकमें प्रस्थ तीन प्रकारका होता है उसीप्रकार सब लोकमें प्रस्थ तीन प्रकारसे विभक्त है, अनागत, वर्तमान और अतीत । उनमेंसे जो निष्पन्न नहीं हुआ है वह अनागत प्रस्थ है, जो बनाया जा रहा है वह वर्तमान प्रस्थ है और जो निष्पन्न हो चुका है तथा व्यवहारके योग्य है वह अतीत प्रस्थ है । उनमेंसे अतीत प्रस्थके द्वारा संपूर्ण बीज मापे जाते हैं । यहाँ पर इस विषयकी उपसंहाररूप गाथा कहते हैं--

प्रस्थ तीन प्रकारका हैं, अनागत, वर्तमान और अतीत । इनमेंसे अतीत प्रस्थके द्वारा संपूर्ण बीज मापे जाते हैं ।। २० ।।

उसीप्रकार, काल भी तीन प्रकारका है, अनागत, वर्तमान और अतीत। उनमेंसे अतीत कालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण जाना जाता है। यहाँ पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं--

काल तीन प्रकारका है, अनागतकाल, वर्तमानकाल और अतीतकाल। इनमेंसे अतीत कालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण जाना जाता है ।।२१।।

तेण कारणेण मिच्छाइट्ठिरासी ण अवहिरिज्जदि, सव्वे समया अवहिरिज्जंति। अदीदकालो थोवो मिच्छाइट्ठिरासी बहुगो त्ति कधं णव्वदे? सोलस-पडिय-अप्पाबहुगादो। कधं सोलसपडिय-अप्पाबहुगं? सव्वथोवो वट्टमाणद्धा, अभवसिद्धिया अणंतगुणा। को गुणगारो? जहण्णजुत्ताणंतं। सिद्धकालो अणंतगुणो। को गुणगारो? छम्मासट्ठमभागेण रूवाहिएण छिण्ण-अदीदकालस्स अणंतिमभागो। अणादिस्स अदीदकालस्स कधं पमाणं ठविज्जदि? ण, अण्णहा तस्साभावपसंगादो। ण च अणादि त्ति जाणिदे सादित्तं पावेदि, विरोहा। सिद्धा संखेज्जगुणा। को गुणगारो? रूवदसपुधत्तं१ (पूर्वमुद्रितप्रतौ- 'सद' इति पाठः।)। असिद्धकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? संखेज्जावलियाओ। अदीदकालो विसेसाहिओ। केत्तियमेत्तेण? सिद्धकालमेत्तेण। भवसिद्धिया मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा। को गुणगारो? भवसिद्धियमिच्छाइट्ठीणमणंतिमभागो। भवसिद्धिया

इसलिये मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण समाप्त नहीं होता है, परंतु अतीत कालके संपूर्ण समय समाप्त हो जाते हैं।

शंका -- अतीतकाल स्तोक है और मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण उससे अधिक है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान -- सोलह पदवाले अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है कि अतीतकालसे मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण अधिक है।

शंका -- सोलह पदिक अल्पबहुत्व किस प्रकार है?

समाधान -- वर्तमानकाल सबसे स्तोक है। अभव्य जीवोंका प्रमाण उससे अनन्तगुणा है। यहाँ पर गुणकार क्या है? यहाँ पर जघन्य युक्तानन्त गुणकाररूपसे अभीष्ट है। अभव्यराशिसे

सिद्धकाल अनन्तगुणा है। गुणकार क्या है? छह महिनोंके अष्टम भागमें एक मिला देने पर जो समयसंख्या आवे उससे भक्त अतीतकालका अनन्तवां भाग गुणकार है।

शंका -- अतीतकाल अनादि है इसलिये उसका प्रमाण कैसे स्थापित किया जा सकता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, यदि उसका प्रमाण नहीं माना जाय तो उसके अभावका प्रसंग आ जायेगा। परंतु उसके अनादित्वका ज्ञान हो जाता है, इसलिये उसे सादित्वकी प्राप्ति हो जायेगी, सो बात भी नहीं है, क्योंकि ऐसा माननेमें विरोध आता है।

सिद्धकालसे सिद्ध संख्यातगुणा हैं। गुणकार क्या है? यहाँ पर दसपृथक्त्वरूप गुणकार लेना चाहिए। सिद्ध जीवोंसे असिद्धकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? यहां पर संख्यात आवलिकाएं गुणकार हैं। असिद्धकालसे अतीतकाल विशेष अधिक है । कितना विशेष अधिक है? सिद्धकालका जितना प्रमाण है, उतने विशेषसे अधिक है। अर्थात् असिद्धकालमें सिद्धकालका प्रमाण मिला देने पर अतीतकालका प्रमाण हो जाता है। अतीत-

----

विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? तेरसगुणट्ठाणमेत्तेण। मिच्छाइट्ठी विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण तेरसगुणट्ठाणपमाणेणूण-अभवसिद्धियमेत्तेण। संसारत्था विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? तेरसगुणट्ठाणमेत्तेण। सव्वजीवा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? सिद्धजीवमेत्तेण। पोग्गलदव्वमणंतगुणं। को गुणगारो? सव्वजीवेहि अणंतगुणो। एसद्धा अणंतगुणा। को गुणगारो? सव्वपोग्गलदव्वादो अणंतगुणो। सव्वद्धा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? वट्टमाणातीदकालमेत्तेण। अलोगागासमणंतगुणं। को गुणगारो? सव्वकालादो अणंतगुणो। सव्वागासं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण? लोगागासपदेसमेत्तेण। जेण अदीदकालादो मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा तेण सव्वे समया अवहिरिज्जंति मिच्छाइट्ठिरासी ण अवहिरिज्जदि त्ति सिद्धं। किमट्ठं कालपमाणं वुच्चदे? मिच्छाइट्ठिरासिस्स मोक्खं गच्छमाणजीवे पडुच्च संते वि वए ण वोच्छेदो होदि त्ति जाणावणट्ठं।

कालसे भव्य मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणा हैं। गुणकार क्या है? भव्य मिथ्यादृष्टियोंका अनन्तवां भाग गुणकार है। भव्य मिथ्यादृष्टियोंसे भव्य जीव विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं? सासादन गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक जीवोंका जितना प्रमाण है उतने विशेषरूप अधिक हैं। अर्थात् भव्य मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणके मिला देने पर समस्त भव्य जीवोंका प्रमाण होता है। भव्य जीवोंसे सामान्य मिथ्यादृष्टि जीव विशेष अधिक हैं। कितने विशेषरूप अधिक है? अभव्य राशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको कम कर देने पर जो राशि अवशिष्ट रहे उतने विशेषसे अधिक हैं। अर्थात् भव्यराशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवालोंका प्रमाण कम करके अभव्य राशिको मिला देने पर सामान्य मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है। सामान्य मिथ्यादृष्टियोंसे संसारी जीव विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं? सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका जितना प्रमाण है उतने विशेषसे अधिक हैं। संसारी जीवोंसे संपूर्ण जीव विशेष अधिक हैं। कितने अधिक हैं? सिद्ध जीवोंका जितना प्रमाण है उतने अधिक हैं। संपूर्ण जीवराशिसे पुद्‌गलद्रव्य अनन्तगुणा है। यहाँ पर गुणकार क्या है? यहाँ पर संपूर्ण जीवराशिसे अनन्तगुणा गुणकार हैं। पुद्‌गलद्रव्यसे अनागतकाल अनन्तगुणा है। यहाँ पर गुणकार क्या है। यहाँ पर संपूर्ण पुद्‌गलद्रव्यसे अनन्तगुणा गुणकार है। अनागतकालसे संपूर्ण काल विशेष अधिक है। कितना अधिक है? वर्तमान और अतीतकालमात्र विशेषसे अधिक है। संपूर्ण कालसे अलोकाकाश अनन्तगुणा है। यहाँ पर गुणकार क्या है? संपूर्ण कालसे अनन्तगुणा यहाँ पर गुणकार है। अलोकाकाशसे संपूर्ण आकाश विशेष अधिक है। कितना अधिक है? लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतना विशेषरूप अधिक है। इस प्रकार इस अल्पबहुत्वसे यह प्रतीत हो जाता है कि अतीतकालसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणा हैं, अत: अतीतकालके संपूर्ण समय अपहृत हो जाते हैं, परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशि अपहृत नहीं होती है, यह बात सिद्ध हो जाती है।

खेत्तेण अणंता लोगा ।।४।।

खेत्तपमाणमुल्लंघिय अप्पवण्णणिज्जं भावपमाणं किमिदि ण परूविज्जदि? खेत्तपरूवणादो भावपरूवणं महदरमिदि ण परूविज्जदे। तं जहा, भावपमाणं णाम

णाणं। तं पि पंचविहं। तत्थ वि एक्केक्कमणेयवियप्पं। तत्थ वि अणेगाओ विप्पडिवत्तीओ त्ति। खेत्तेण कधं मिच्छाइट्ठिरासी मिणिज्जदे? वुच्चदे- जधा पत्थेण जव-गोधूमादिरासी मिणिज्जदे तधा लोएण मिच्छाइट्ठिरासी मिणिज्जदे। एवं मिणिज्जमाणे मिच्छाइट्ठिरासी अणंत लोगमेत्तो होदि त्ति। एत्थुवउज्जंती गाहा--

पत्थेण कोदवेण व जह कोइ मिणेज्ज सव्वबीजाइं।

एवं मिणिज्जमाणे हवंति लोगा अणंता दु ।।२२।।

शंका -- यहाँ पर कालकी अपेक्षा प्रमाण किसलिये कहा गया है?

समाधान -- मोक्षको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा संसारी जीवराशिका व्यय होनेपर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशिका सर्वथा विच्छेद नहीं होता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिये यहाँ पर कालकी अपेक्षा प्रमाण कहा है।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा अनन्त लोकप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है ।।४।।

शंका -- यहाँ पर क्षेत्रप्रमाणका उल्लंघन करके अल्पवर्णनीय भावप्रमाणका प्ररूपण क्यों नहीं किया गया है?

समाधान -- क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपण करनेकी अपेक्षा भावप्रमाणका प्ररूपण अतिविस्तृत है, इसलिये भावप्रमाणका प्ररूपण पहले नहीं किया गया है। भावप्रमाणका प्ररूपण अतिविस्तृत है आगे इसीका स्पष्टीकरण करते है। ज्ञानको भावप्रमाण कहते हैं। वह भी पांच प्रकारका है। उन पांच भेदोंमें भी प्रत्येक अनेक भेदरुप है। उसमें भी अनेक विवाद हैं। इससे सिद्ध होता है कि भावप्रमाणका प्ररूपण क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपणकी अपेक्षा अतिविस्तृत है।

शंका -- क्षेत्रप्रमाणके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि कैसे मापी, अर्थात् जानी जाती है?

समाधान -- जिस प्रकार प्रस्थसे जौ, गेहूं आदिकी राशिका माप किया जाता है, उसी प्रकार लोकप्रमाणके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि मापी अर्थात् जानी जाती है। इस प्रकार लोकके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका माप करने पर वह अनन्त लोकमात्र है। यहाँ पर इस विषयकी उपयोगी गाथा दी जाती है--

जिस प्रकार कोई प्रस्थसे कोदोंके समान संपूर्ण बीजोंका माप करता है उसी प्रकार मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी लोकसे अर्थात् लोकके प्रदेशोंसे तुलना करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण लानेके लिये अनन्त लोक होते हैं, अर्थात् अनन्तलोक प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि है ।।२२।।

पत्थेण ताव पत्थबाहिरत्थो पुरिसो पत्थबाहिरत्थाणि बीयाणि मिणेदि। कधं लोएण लोयत्थो पुरिसो लोयत्थं मिच्छाइट्ठिरासिं मिणेदि त्ति? जदो लोगेण पण्णाए मिणिज्जंते मिच्छाइट्ठिजीवा तदो ण एस दोसो। कधं पण्णाए मिणिज्जंते मिच्छाइट्ठिजीवा? वुच्चदे-एक्केक्कम्मि लोगागासपदेसे एक्केक्कं मिच्छाइट्ठिजीवं णिक्खिविऊण एक्को लोगो इदि मणेण संकप्पेयव्वो। एवं पुणो पुणो मिणिज्जमाणे मिच्छाइट्ठिरासी अणंतलोगमेत्तो होदि। एत्थुवसंहारगाहा---

लोगागासपदेसे एक्केक्के णिक्खिवेवि तह दिट्ठिं।
एवं गणिज्जमाणे हवंति लोगा अणंता दु ।।२३।।

को लोगो१ (जगसेढिघणयमाणो लोयायासो। ति. प. पत्र ४. पयरं सेढीए गुणियं लोगो। अनु. सू. पृ. १५९.) णाम? सेढिघणो। का सेढी२ (सेढी वि पल्लछेदाणं। होदि असंखेज्जदिमप्पमाणविदंगुलाण हदी।। त्रि. सा. ७. असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ सेढी। अनु. पृ. १५९. छ. ५) ? सत्तरज्जुमेत्तायामो। का रज्जू णाम? तिरियलोगस्स मज्झिमवित्थारो। कधं तिरियलोगस्स रुंदत्तणमाणिज्जदे?

शंका -- प्रस्थसे बहिर्भूत पुरुष प्रस्थसे बहिर्भूत बीजोंको प्रस्थके द्वारा मापता है, यह तो युक्त है, परंतु लोकके भीतर रहनेवाला पुरुष लोकके भीतर रहनेवाली मिथ्यादृष्टि जीवराशिको लोकके द्वारा कैसे माप सकता है?

समाधान -- जिसलिये बुद्धिसे संपूर्ण मिथ्यादृष्टि जीव लोकके द्वारा मापे जाते हैं, इसलिये उपर्युक्त दोष नहीं आता है।

शंका -- बुद्धिसे मिथ्यादृष्टि जीव कैसे मापे जाते हैं?

समाधान -- लोकाकाशके एक एक प्रदेश पर एक एक मिथ्यादृष्टि जीवको निक्षिप्त करके एक लोक हो गया इसप्रकार मनसे संकल्प करना चाहिये। इसप्रकार पुन: पुन: माप करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि अनन्तलोकप्रमाण होती है। इसप्रकार बुद्धिसे मिथ्यादृष्टि जीवराशि मापी जाती है। इस विषयकी यहाँ पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं --

लोकाकाशके एक एक प्रदेश पर एक एक मिथ्यादृष्टि जीवको निक्षिप्त करे इसप्रकार पूर्वोक्त लोकप्रमाणके क्रमसे गणना करते जाने पर अनन्त लोक हो जाते हैं ।।२३।।

शंका -- लोक किसे कहते हैं?

समाधान -- जगच्छ्रेणीके घनको लोक कहते हैं।

शंका -- जगच्छ्रेणी किसे कहते हैं?

समाधान -- सात रज्जुप्रमाण आकाश प्रदेशोंको लंबाईको जगच्छ्रेणी कहते हैं।

जत्तियाणि दीवसागररूवाणि जंबूदीवच्छेदणाओ च रूवाहियाओ केसिं च आइरियाण-मुवएसेण संखेज्जरूवाहियाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिणा छिण्णावसिट्ठं गुणिदे रज्जू णिप्पज्जदि। एसो रासी सेढीए सत्तमभागो१ (जगसेढीए सत्तमभागो रज्जू य भासंते। ति. प. पत्र ६. जगसेढिसत्तभागो रज्जू। त्रि. सा. ७. उद्धारसागराणं अड्ढाइज्जाण जत्तिया समया। दुगुणादुगुणपवित्थर-दी वोवहि रज्जु एवइया।। बृ. क्षे. १, ३.)। कम्मि तिरियलोगस्स पज्जवसाणं? तिण्हं वादवलयाणं बाहिरभागे। तं कधं जाणिज्जदि? ‘लोगो वादपदिट्ठिदो’ त्ति वियाहपण्णत्तीवयणादो। सयंभुरमणसमुद्दबाहिरवेदियाए

शंका -- रज्जु किसे कहते हैं?

समाधान -- तिर्यग्लोकके मध्यम विस्तारको रज्जु कहते हैं।

शंका -- तिर्यग्लोककी चौडाई कैसे निकाली जाती है?

समाधान -- जितना द्वीपों और सागरोंका प्रमाण है उनको तथा एक अधिक जम्बूद्वीपके छेदोंको विरलित करके तथा उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे, अर्धच्छेद करनेके पश्चात् अवशिष्ट राशिको गुणित कर देने पर रज्जुका प्रमाण उत्पन्न होता है। अथवा, कितने ही आचार्योंके उपदेशसे जितना द्वीपों और सागरोंका प्रमाण है उसको और संख्यात अधिक जम्बूद्वीपके छेदोंको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे, छेद करनेके पश्चात् अवशिष्ट राशिको गुणा कर देने पर रज्जुका प्रमाण उत्पन्न होता है। यह जगच्छ्रेणीका सातवां भाग आता है।

विशेषार्थ -- रज्जुके विषयमें दो मत पाये जाते हैं। कितने ही आचार्योंका ऐसा मत है कि स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिका पर जाकर रज्जु समाप्त होती है। तथा कितने ही आचार्योंका ऐसा मत है कि असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंकी चौडाईसे रुके हुए क्षेत्रसे संख्यात गुणा योजन जाकर रज्जुकी समाप्ति होती है। स्वयं वीरसेन स्वामीने इस दूसरे मतको अधिक महत्व दिया है। उनका कहना है कि ज्योतिषियोंके प्रमाणको लानेके लिये २५६ अंगुलके वर्ग प्रमाण जो भागहार बतलाया है उससे यही पता चलता है कि स्वयंभूरमण समुद्रसे संख्यातगुणा योजन जाकर ही मध्यलोककी समाप्ति होती है। इन दोनों मतोंके अनुसार रज्जुका प्रमाण निकालनेके लिये रज्जुके जितने अर्धच्छेद हों उतने स्थानपर २ रख कर परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका अर्धच्छेद करनेके अनन्तर जो भाग अवशिष्ट रहे उससे गुणा कर देना चाहिए। इसप्रकार करनेसे रज्जुका प्रमाण आ जाता है। जितने द्वीप और समुद्र हैं उनमें एक अधिक या संख्यात अधिक जम्बूद्वीपके अर्धच्छेद मिला देने पर रज्जुके अर्धच्छेद हो जाते हैं। इनके निकालनेकी प्रक्रिया इसप्रकार है--

----

परदो केत्तियमद्धाणं गंतूण तिरियलोगसमत्ती होदि त्ति भणिदे असंखेज्जाणि जोयणाणि दीवसमुद्दरुंदरुद्धजोयणेहिंतो संखेज्जगुणाणि गंतूण होदि। एदं कुदो णव्वदे?

जोइसियाणं वेछप्पण्णंगुलसदवग्गमेत्तभागहारपरूवयसुत्तादो१ (मजिदम्हि सेढिवग्गे वेसयछप्पण अंगुलकदीए। जं लद्धं सो रासी जोदिसियसुराणं सव्वाणं। ति. प. पत्र २०१. तिण्णिसयजोयणाणं बेसदछप्पणअंगुलाणं च। कदिहिदपदरं वेंतरजोइसियाणं च परिमाणं।। गो. जी. १६०. बेछप्पण्णंगुलसयवग्गपलिभागो पयरस्स। अनु. सू. १४२. पृ. १९२.), 'दुगुणदुगुणो दुवग्गो णिरंतरो तिरियलोगे' त्ति तिलोयपण्णत्तिसुत्तादो य णव्वदे। ण च एदं